GOVT. DIGVIJAY PG COLLEGE RAJNANDGAON

सामज कार्य विभाग
त्र

PAPER 3TH समूह कार्य

SEMESTER -1

TOPIC- भारत में सामाजिक सामूहिक कार्य का इतिहास

रुपरेखा

भारत में सामाजिक सामूहिक कार्य का इतिहास

प्रस्तावना

अर्थ एवं परिभाषा

स्वतंत्रता पूर्व भारत में समूह कार्य का विकास

स्वतंत्र भारत में समूह कार्य का विकास

सारांश

संदर्भ सूचि

भारत में सामाजिक सामूहिक कार्य का इतिहास

प्रस्तावना समाज समूह कार्य की उत्पत्ति पश्चिमी देशों और भारत में हाल ही में हुई है यद्यपि समाज कार्य और समाज कल्याण का कार्य प्राचीन काल से ही भारत के इतिहास का एक हिस्सा रहा है जबकि व्यवसायिक समाज कार्य का उद्‌गम बहुत बात का है समाज कार्य की प्रणाली के रूप में समूह कार्य का आरंभ केवल उसी समय से हुआ जब समाज कार्य को व्यवसाय का स्तर प्राप्त हुआ और उसे समूह कार्य के रूप में मान्यता प्राप्त हुई समूह दृष्टिकोण प्राचीन और मध्यकालीन भारत में परोपकारी पिता के रूप में प्रयोग होता रहा है यह सच है कि इसका स्वरूप प्रकृति और प्रणाली बिल्कुल भी ना रही है दोनों बिन युगों में भारत में हुए सामाजिक समूह के ऐतिहासिक विकास पर इस अध्याय का अध्ययन केंद्रित रहेगा अर्थात इन दोनों युग में हम सामाजिक समूह कार्य के विकास को आपके सक्षम रखेंगे एवं स्वतंत्रता के पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात भारत में परिदृश्य पर मुख्य रूप से प्रकाश डालेंगे

''अर्थ एवं परिभाषा''

''सामाजिक समुह एसे व्यक्तियों का संग्रह है/जिनके बीच किसी न किसी प्रकार का संबंध पया जाता है।''

- **विल्सन और रायलैण्ड के अनुसार :–**
- ''सामाजिक सेवा कार्य एक प्रक्रिया हैं, और एक प्रणाली हैं, जिसके द्वारा एक कार्यकर्ता प्रजातंत्रावली लक्ष्यों की प्राप्ति के लिय परस्पर सम्बंधित प्रक्रिया को सचेत रूप से निर्देशित करता हुआ सामूहिक जीवन को प्रभावित करता है।''
- **ऑकबर्न एवं निमकॉक के अनुसार :–**
- '' जब कभी दो व्यक्ति एक साथ मिलते हैं, और एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं, तो वे एक समूह का निर्माण करते हैं।''

स्वतंत्रता पूर्व भारत में समूह कार्य का विकास

स्वतंत्रता पूरे भारत में समूह कार्य अभ्यास अधिक संगठित औपचारिक विद्या व्यवस्थित नहीं था और इसका भारतीय समाज की अलग ही विशेषताओं के साथ निकटता से अंतःक्षेप तथा समूह कार्य के नितांत आवश्यक कार्यों को सामाजिक संस्था द्वारा किया जाता था स्वतंत्रता पूर्व भारत में लोगों के जीवन पर सामाजिक संस्थाओं का भारी दबाव था इन संस्थाओं के द्वारा स्थितियों तथा अनुभवों को उपलब्ध कराया गया और अपने ही सदस्यों को इनका लाभ दिया गया तथा व्यवसायियों एवं व्यवसायियों एजेंसियों द्वारा बाहरी अंतःक्षेप की आवश्यकता कि नहीं थी और यदि कुछ रही भी हो तो वह बहुत ही सीमित थी स्वतंत्रता पूर्व भारत में जीवन के सभी क्षेत्रों में देखे गए समूह कार्य के पहलुओं को नीचे संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं

परिवारिक परिदृश्य
शैक्षिक परिदृश्य
आर्थिक परिदृश्य
धार्मिक परिदृश्य
राजनीतिक सामाजिक परिदृश्य

स्वतंत्र भारत में समूह कार्य का विकास

समाज कार्य अभ्यास की प्रणाली के रूप में सामाजिक समूह कार्य को भारत में समाज कार्य शिक्षा के संदर्भ में देखा जा सकता है समूह कार्य का आरंभ 1936 में प्रथम समाज कार्य विद्यालय की स्थापना सर दोराब जी टाटा स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस के नाम से हुई इसके थोड़े दिन पश्चात दिल्ली और बडौदा में समाज कार्य विद्यालय की स्थापना हुई समाज कार्य शिक्षा को अकादमिक स्तर प्राप्त हुआ तथा समूह कार्य को किसके एक पाठ्यक्रम के रूप में मान्यता प्राप्त हुई भारत में वर्ष 1960 में सबसे पहले दो बड़ौदा स्कूल ऑफ सोशल वर्क ने समूह कार्य अभ्यास का प्रथम रिकॉर्ड को प्रकाशित किया था

भारत में एसोसिएशन ऑफ स्कूल ऑफ सोशल वर्क और टेक्निकल को ऑपरेशन नेम संयुक्त रुप से समूह कार्य के लिए न्यूनतम मानक निर्धारित किए इसके पश्चात संपूर्ण भारत में समाज कार्य विद्यालयों की स्थापना में अत्यधिक वृद्धि हुई और केस कार्य और सामुदायिक संगठन के साथ इन सभी विद्यालयों में समूह कार्य को समुचित स्थान प्राप्त हुआ अकादमी रूप से सशक्त हो जाने पर समूह कार्य को अभ्यास में सशक्तिकरण प्राप्त हुआ आज विभिन्न समाज कार्य स्थापना समाज समूह कार्य अभ्यास किया जाता है स्वतंत्र और समकालीन भारत में संस्थागत समुदाय स्थापना में समूह कार्य अभ्यास का विश्लेषण निम्न प्रकार है

स्वतंत्र भारत में समूह कार्य का विकास
संस्थागत समूह कार्य
नशाबंदीकेंद्रों में समूह कार्य
युवा कल्याण के लिए समूह कार्य
अस्पतालों के लिए समूह कार्य
विद्यालयों के लिए समूह कार्य
सुधारात्मक संस्थानों में समूह कार्य
आंगनबाड़ी
गैर सरकारी संगठनों द्वारा समूह कार्य
समुदाय स्थापना में समूह कार्य
स्व सहायता समूह कार्य

सारांश

सामाजिक विकास का समूह कई दृष्टिकोण भारतीय सामाजिक जीवन का हमेशा ही भीख मांग रहा है भारत में सामाजिक धार्मिक संस्था ने समाज के कल्याण और विकास के लिए हमेशा ही समूह दृष्टिकोण को अपनाया है यद्यपि भारत में व्यवसायिक समूह में कार्य का विकास जैसे प्रणाली हाल ही की परिघटना है भारत में समूह कार्य अभ्यास प्रसिद्ध है समाज कार्य प्रणाली को संस्थागत और सामुदायिक स्तर दोनों पर अपनाया गया है भारत में समूह कार्य के विकास में स्थापित मील के पत्थरों को जो विभिन्न समय में रखे गए हैं इस अध्ययन में संक्षेप वर्णन किया गया है

कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. http:www.iloveindia.com "ऐनिसिएंट इंडिया टाइम लाइन - हिस्ट्री ऑफ इंडिया"
2. इबिड़
3. http:www.indiaedu.com हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इंडिया"
4. "एनिसिएंट इंडिया टाइम लाइन - हिस्ट्री ऑफ इंडिया"
5. http:www.iloveindia.com
6. http:www.iloveindia.com "ऐनिसएिंट इंडिया टाइम लाइन - हिस्ट्री ऑफ इंडिया - बुद्धिज़्म

   "श्रेणी (गिल्ड्स) : ए यूनिक सोशल इन्नोवेशन ऑफ ऐनिसिएंट इंडिया बाई मणिकांत शाह एंड डी.पी. अग्रवाल
7. झा. जे. के. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क. वाल्यूम-1, फर्स्ट एडीशन, अनमोल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2001
8. भट्टा चार्य, संजय, इंटैग्रेटिड अप्रोच टु सोशल वर्क प्रैक्टिस, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
9. http:www.ecdgroup.com SITS VIS India - इंटेग्रेटिड चाइल्ड डेवलपमेंट सर्विसज (ICDS) बाई दि - कंसलटेटिव सेक्रटेरियट, 1993
10. सोशल वेलफेयर वाल्यूम-52 नं. 6, सितम्बर-2006 सी एस डब्ल्यू बी
11. रवि, वी.रेड्डी, नारायना, वेंकटारमन्ना एम (इवी) इम्पावरमेंट ऑफ पीपल्सग्रासरूट स्ट्रेटिजी एंड ईशूज। कनि का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2004
12. इबिड़
13. http:www.minister-local admin.kerala.gov.in
14. http:www.hindubusinessline.com. मार्च 25, कोची ब्यूरो रिपोर्ट कुदुम्बश्री यूनिट ऑफ कोची टु वाइडन आप्रेशन

THANK YOU